RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-03
Issue-09
September-2018

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

प्रकाश मनु के उपन्यास "खुक्कन दादा का बचपन" में बच्चों का मनोरंजन एवं ज्ञान वर्धन

मधु

एम.ए. छात्रा, पंजाब युनिवर्सिटी, चण्डीगढ़

प्रस्तावना

प्रकाश मनु जी का व्यक्तित्व :–

प्रकाश मनु जी बहुत ही अच्छे कवि होने के साथ–साथ अच्छे उपन्यासकार और कहानीकार भी हैं। इन्होंने बाल मनोरंजन के ऊपर बहुत सी कहानियाँ और उपन्यास लिखें है जिनमें से ''खुक्कन दादा का बचपन''एक हैं। जिसमें इन्होंने बच्चों की प्यारी हरकतों, उनके सवाल–जवाब का बहुत ही रोचक वर्णन किया हैं।

''खुक्कन दादा का बचपन'' उपन्यास में मुख्य पात्र खुक्कन दादा थे, जोकि बहुत ही पढ़ाकू थे और सारा दिन–भर किताबों के बीच घुसे रहते थे । उनके पास एक शीशम का बड़ा–सा मेज था जिस पर बहुत–सारी किताबें रखी थी । वह सारा दिन किताबों के बीच ही खोए रहते थे।

"अंकल, यह इतनी गहरी–गहरी–सी तपस्या काहे के लिए ... . कि न दिन को चैन, न रात को!'' बच्चा पार्टी ने पूछना चाहा, पर पूछ न सकी ।[1]

बच्चे हमेशा गंगा ताई के चबूतरे पर खेलते रहते थे । वहीं से खुक्कन दादा का कमरा साफ दिखाई देता था। बच्चा पार्टी हँसती थी कि इतने छोटे से कमरे में टहला कैसे जाता है ।

"दूसरे, जिस चीज पर बच्चों का ध्यान गया, वह था खुक्कन दादा का बादामी रंग का खूब लंबा–सा कुर्ता, जिसे वे अकसर कमरे में पहने रहते थे । जाने कब वह धुलता था और फिर झट से खुक्कन दादा के शरीर पर विराज जाता था ! कहना मुश्किल था ।[2]

"सुना है, दिल्ली से आए हैं, दिल्ली से ! मेरे भइया बता रहे थे कुछ दिन पहले ..... कि ये कुरूक्षेत्र युनिवर्सिटी में रिसर्च करने आए हैं !'' दीप ने बड़ी शान से कहा ।[3]

"बाप रे बाप, तभी इतनी किताबें हैं ..... !"
''पता नहीं क्या खोजेंगे इन किताबों में ?"
"चलो, चलकर पूछते हैं ।" दीपू ने कहा ।[4]

बच्चा पार्टी आपस में खुसर–फुसर करने लगी कि कौन आगे जायेगा, खुक्कन दादा के पास । खुक्कन दादा हमेशा की तरह अपनी किताबों में खोये हुए थे । उनकी तीखी नाक किताबों में गड़ी हुई थी । ऊपर से चश्मा लगा हुआ था । उनका चश्मा अचानक से नीचे गिर पड़ा । उन्होंने चारो तरफ नजर घुमाई और देखा सामने बच्चा पार्टी खड़ी थी । पहले तो वह थोड़े–से खीजे देखकर बच्चों को परन्तु बाद में हँसते–हँसते चले गए इतना हँसे कि उनकी आँखों से आँसू आ गए ।

खुक्कन दादा को वे काफी समय से देखते आ रहे थे । दादा ने कहा बच्चों आओ मैं तो कब से तुम्हारी बच्चा पार्टी की इंतजार कर रहा था । बच्चे हैरान हो गये दादा का ये रूप देखकर । उन्होंने कहा बच्चो आओ और बच्चे मेज और टेबल पर बैठ गए । दादा ने कहा "पूछो बच्चो, क्या पूछना चाहते हो । बच्चे हैरान थे कि दादा को कैसे पता कि हम कुछ पूछना चाहते हैं ।

"क्यों जी, पता कैसे नहीं ।" खुक्कन दादा इस दफा फिर हँसे तो हँसते ही चले गए । थोड़ा बालों को पीछे झटककर बोले, "भई, कुछ तो जासूसी हम भी जानते हैं । तुम क्या समझते हो, तुम लोग मेरी जासूसी कर सकते हो तो मैं तुम्हारी नहीं कर सकता ? अरे भई, हम भी तो कभी बच्चे थे ..... और तुमसे कम शरारती तो हरगिज न थे । समझे !''[5]

ये सुनते ही सारे बच्चों की आँखे चमकी । दीपू, संजू, देबू, छुटकी और गुल्लू उर्फ करमकल्ला सभी ने एक दूसरे की तरफ आँख घुमाकर देखा और सबने हार मान ली।

खुक्कन दादा बोले मानने से काम नहीं चलता । जिस काम के लिए आये थे वह पूछो । संजू अपनी भूमिका निभाने की कोशिश करता है परन्तु बोल नहीं पाता । उसके शब्द बीच में ही रूक जाते हैं । तब छुटकी कहती है कि यह तो भोला–भाला है । ये क्या बोलेगा मैं ही पूछती हूँ। खुक्कन दादा, आप इस तख्त पर इतनी किताबें बिखेरकर रखते हैं । आप इन किताबों में क्या ढूंढते रहते हैं। आपकी आँखें खराब नहीं होती या इसलिए आपने इतना मोटा चश्मा लगाया हुआ है ।

खुक्कन दादा हँसकर बोले, "भई, मैं जिस काम के लिए दिल्ली से आया हूँ, तुम्हारे इस प्यारे से शहर की युनिवर्सिटी में, उस काम को कहा जाता है रिसर्च । यानी किसी एक विषय पर खूब सारी चीजें पता करके, खोज–बीन करके एक बढ़िया किताब लिखनी है मुझे ..... बस, यह समझ लो । तो जरूरत पड़ने पर और किताबों की भी मदद लेनी पड़ती है ! देखना पड़ता है कि तमाम लेखकों का इस बारे में क्या कहना है । समझे कुछ ?"[6]

दीपू ने कहा – आपसे पहले यहां हरिहर काका रहते थे । वह रिटायर होकर इलाहाबाद चले गये अपने शहर में । वे हमें बहुत ही कहानियाँ सुनाया करते थे । आप भी हमें कहानियाँ सुनाओ न खुक्कन दादा । दीपू, संजू, छुटकी सभी पीछे पड़ गये ।

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

खुक्कन दादा ने कहा मुझे कहानियाँ नहीं आती परन्तु बच्चों के जिद करने पर उन्होंने सुनाने को कहा । खुक्कन दादा ने माथा खुजलाते हुए कहानी के सागर में छलाँग लगा दी ।

"कहानी अधकू की" में अधकू नाम का एक व्यक्ति था जो दिखने में बहुत ही अजीब था, उसकी एक आँख, एक कान, एक लात थी, सब उसे देखकर बहुत हैरान होते थे कि कितना अजीब–सा व्यक्ति है । अधकू के छह भाई थे! वे बहुत हट्टे–कट्टे थे और अधकू को मारने की योजना बनाते रहते थे कि यह किसी काम का नहीं है इसे मार दो ।

एक बार उसके भाई छुरियाँ तेज कर रहे थे कि आज तो हम इस अधकू का अंत कर देंगे कि अचानक आँखें बंद किए अधकू बोला "छुरियाँ न चमका कि अधकू जागदा ..!'' सुनकर उसके भाई हक्के–बक्के रह गए, अरे, यह, यह तो जाग रहा है । खीजकर बोले, ''मरे अधकू दी माँ कि अधकू जागदा ।''[7]

अधकू की माँ उसे बहुत प्यार करती थी, इसीलिए वह उसे हमेशा सावधान कर देती थी ।

"तो यों अधकू अधकू रहा, शरीर से कमजोर होकर भी दिमाग से सबसे आगे । खूब करिश्मे उसने किए, खूब कमाल दिखाया और बड़ा नाम किया !" [8]

"वो चोरी का किस्सा" में खुक्कन दादा स्वयं ही चोर थे । वह बच्चों को सुनाने लगे कहानी तो बच्चे हैरान हो गए कि आपने चोरी क्यों की ।

दादा ने कहा सब करते हैं चोरी मैंने कर ली तो क्या हो गया । उन्होंने कहा– मुझे टाफी खानी होती थी और नानी पैसे देने में आनाकानी करती थी क्योंकि टाफी से दाँत खराब होते थे । एक बार का किस्सा सुनाता हूँ । दोपहर का वक्त था । नानी सोई हुई थी । मैंने बिना आवाज के अलमारी खोली और बटुआ निकाल लिया । जैसे ही मैं उसे खोलने लगा उसमें से आवाज आई और मैं डर गया । मुझे लगा भूत है मैंने पूछा कौन बोल रहा है ।

"नहीं–नहीं, मैं ..... मैं बटुआ बोल रहा हूँ ।" फिर वही अजीब–सी आवाज सुनाई दी, "साफ–साफ कह दो खुक्कन, आज तक कितने पैसे चुराए हैं तुमने ? नहीं तो तुम छोटे होकर इसी बटुए के अंदर बंद हो जाओगे, मक्खी की तरह । समझ गए ?"[9]

खुक्कन ने कहा बटुए भाई, अभी पन्द्रह दिन से ही यह काम शुरू किया है । जब नानी गहरी नींद में सोती है दोपहर में तो मैं पैसे चुराता हूँ परन्तु अब मुझे माफ कर दो। मैं दोबारा यह गल्ती नहीं करूँगा । रोने वाली शक्ल हो गई थी मेरी । बस उस दिन के बाद मैंने कभी चोरी नहीं की ।

"चार रंग के दस्ताने" में खुक्कन दादा बताते हैं कि उनकी नानी ने उन्हें दस्ताने बनाकर दिए जिसे मैं स्कूल में पहन कर गया और सोचा कि मेरे मित्र मुझे बधाई देंगे परन्तु वहां तो उल्टा ही हो गया । क्लास के बच्चों ने एक गुट बनाकर तालियाँ बजानी शुरू कर दी कहने लगे – "देखो–देखो, खुक्कन के अजीब–से दस्ताने ... .चार रंगों वाले दस्ताने ।"[10]

मैं बहुत उदास हो गया । सब बच्चे मेरा मजाक उड़ा रहे थे ।

नानी हँसते हुए बोली, "बेटा मैंने तुझे शुरू में ही समझाया था न ! तू चिढ़ता है, इसलिए सभी चिढ़ाते हैं । अब तू चिढ़ना छोड़ दे, फिर सब ठीक हो जाएगा ।"[11] तब से मैंने ठान ली कि मैं किसी की बात पर नहीं चिढूंगा और धीरे–धीरे बच्चों ने मुझे चिढ़ाना बंद कर दिया ।"

"खुक्कन दादा की वो नीली गेंद" में दादा ने अपनी नानी से नीली रंग की गेंद मांगी । जिसे मैं टप्पे मारकर फर्श पर खेल सकूं । नानी ने कहा मैं तुझे शाम को ला दूँगी और नानी ने मुझे शाम को गेंद ला दी जिसे देखकर मैं बहुत खुश हुआ । सारे बच्चे मेरी गेंद देखकर खुश हुए कि अब खुक्कन की गेंद आ गई है । हम इसके साथ खेलेंगे । सोनू, मोनू, भोला सब कहने लगे कि गेंद आ गई, खुक्कन की गेंद ।

खेलते–खेलते गेंद नाली में गिर गई और मैं पीछे भागा परंतु मिली नहीं । मैं रोने लगा । चारपाई पर पड़कर और सो गया । सारी रात मुझे गेंद के ही सपने आते रहे ।

नानी ने पुचकारते हुए कहा कि कहां गई गेंद? तो खुक्कन ने कहा नाली में । अब तो वह आसमान का तारा बन गई पता नहीं अब कब मिलेगी ।

मेरी बात पूरी हो पाती इससे पहले ही नानी हँस पड़ी । बोली, "वो देख, सामने शेरू ! उसके मुँह में क्या है?"[12] मैं बहुत खुश हुआ गेंद को देखकर, मैंने उसे उछाला और फिर उसके साथ खेलने लगा ।

"डब्बू और डुगडुग" में खुक्कन दादा बताते हैं कि उन्होंने दो पिल्ले पाले थे । वह कहते हैं कि सर्दियों की प्यारी सी सुबह थी । मेरी निगाह एक गदबदे पिल्ले पर गई । मैंने उसे पुचकारा तो वह छलाँग लगाकर पीछे आने लगा । मैंने कहा और भी डब्बू तू तो बड़ा कमाल का है । वह खुश होता गया । अभी थोड़ा पीछे ही गया था कि एक और पिल्ला उसके शरीर पर सफेद रंग के निशान थे, पीछे आ गया । मैंने कहा और भी डब्बू क्या यह तेरा भाई है और इसका नाम मैंने अभी रखा है डुगडुग । मैं दोनों भाइयों को अपने घर ले गया । देखो नानी मेरे प्यारे–प्यारे दोस्त को कुछ खाने को दो ।

तब नानी ने दोनों को दूध में रोटी डालकर दी । दोनों ने रोटी खाई और उछल–कूद करने लगे । इतने में डब्बू और डुगडुग की माँ आ गई । उसे भी रोटी और दूध पिलाया । डब्बू और डुगडुग वहीं मेरे घर रहने लगे । इतनी दोस्ती हो गई कि वो कभी वहां से गए ही नहीं । मेरे आने के बाद वे रोज आते परंतु उदास होते कुछ खाते भी नहीं और एक दिन ऐसा आया कि वो दोनों ही नहीं रहे ।

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

"अब भी कभी–कभी उन दोनों की शक्लें और प्यार याद आता है तो ...." कहते–कहते खुक्कन दादा उदास हो गए । फिर बोले, "प्यार क्या होता है, यह तो भई सचमुच डब्बू और डुगडुग से सीखा! और यह भी कि मूक–सा जानवर प्यार में आदमी से किसी कदर कम नहीं है। इसलिए कि इसमें स्वार्थ नहीं है । मन इसका आदमियों से भी ज्यादा निर्मल है ।"[13]

"खुक्कन दादा का बचपन" उपन्यास में प्रकाश मनु जी ने बचपन की वो सारी यादें ताजा कर दी हैं जो हर बच्चा अपने बचपन में करता है । उन्होंने उपन्यास को इतना सहजता से लिखा है कि कोई भी पाठक उससे आकर्षित हुए बिना नहीं रह सकता । उपन्यास को पढ़कर ऐसा लगता है जैसे सब कुछ अपने साथ ही हो रहा हो ।

संदर्भ सूची : –

1. प्रकाश मनु, खुक्कन दादा का बचपन, पृष्ठ संख्या – 7
2. वही, पृष्ठ संख्या – 8
3. वही, पृष्ठ संख्या – 8
4. वही, पृष्ठ संख्या – 9
5. वही, पृष्ठ संख्या – 11
6. वही, पृष्ठ संख्या – 12
7. वही, पृष्ठ संख्या – 14
8. वही, पृष्ठ संख्या – 15
9. वही, पृष्ठ संख्या – 24
10. वही, पृष्ठ संख्या – 30
11. वही, पृष्ठ संख्या – 31
12. वही, पृष्ठ संख्या – 36
13. वही, पृष्ठ संख्या – 43

© RRIJM 2015, All Rights Reserved